RESEARCH PAPER | Literature | Volume : 4 | Issue : 2 | Feb 2014 | ISSN - 2249-555X

हिन्दी भाषा विकास में पत्रकारिता का योगदान
Hindi Bhasha Vikas Me Patrakarita Ka Yogdan

KEYWORDS

Dr. Pandurang Mahalinge
Sheth LUJ & SIR M.V. College Andheri (E) Mumbai

भारत के विस्तृत भू–भाग में बोली और समझी जानेवाली भाषा हिन्दी है इसी में ही भारतवासियों की आत्मा मुखरित है। अमीर खुसरों ने इसके व्यापक रुप का सक्षात्कार कराया है।

''शर्मों हया दर हिन्दी लाज,
हासिल कहिए बाज खिराज ।''[1]

मलिक मुहम्मद जायसी ने प्रेम–मार्ग को प्रदर्शित करनेवाली भाषाओं को वरण्य माना है, जिनमें हिन्दी खरी उतरती है।

''अरबी तुरकी, हिन्दुई, भाषा जेति आहि,

जेहि मॅह मारग प्रेम का सबै सराहै ताहि ।''[2]

हिन्दी के कुछ कवियोंने केवल 'भाषा' शब्द का हि प्रयोग कि या है। तथा इसके गुणों की चर्चा की है। कबीर कहतें हैं

''संस्कीरत है कूप जल, भाषा बहता नीर ।''

इससे स्पष्ट होता है कि हिन्दी भाषा मानव के बुद्धि–कौशल, विवके, चिन्तन आचार–व्यवहार तथा संस्कृति की भाषा है। यह ऐसी जीवंत भाषा है जिसमें अन्तर्निहित रचनात्मक शक्ति है व्यवहार धर्मिता है और गतिमयता है । हिन्दी आर्य संस्कृति की संवाहिका है। इस भाषा का विकास भारतीय लोक चेतना का वि कास है। नवजागरण और मुक्ति की कामना के प्रसार में हिन्दी का योगदान अविस्मरणीय है। राजाराम महोन राय और केशवचन्द्र सेन ने हिन्दी को ही भारत की एकमात्र मुक्तिदायिनी भाषा माना है। महर्षि दयानंद हिन्दी के सर्वस्व माने जाते है। बंकिमचन्द्र चाटर्जी ने कहा है कि ''हिन्दी एक दिन भारत की राष्ट्रभाषा होकर रहेगी क्योकि हिन्दी भाषा की सहायता से भारत के विभिन्न प्रदेशों में ऐक्य–बंधन स्थापित कर सकेंगे वे ही सच्चे भारत बंधु की संज्ञा पाने योग्य होंगे।''[3]

स्वतंत्रा लढाई में हिन्दी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए तोप का कार्य कि है। बंधन–मुक्ति के यज्ञ में बहादुर शाह जफर, तात्या टोपे और कुँवर सिंह ने हिन्दी में ही रणभेरी बज. ई। मुहम्मद इकबाल ने 'हिन्दी हैं हम वतन हैं हिन्दोसता हमारा' का नारा दिया। आगे चलकर अनेक विद्वानों ने साहित्यकारों ने संतों ने क्रातिकारियों ने हिन्दी को विकसित करने में योगदान दिया हैं।

हिन्दी भारत के विराट व्यक्तित्व का अनमोल स्वर है, समन्वय सूत्र है। यह भारतीय जन–मानस की जान्हवी, प्रेम की मंदाकिनी है। इसमें देश की एकता सन्निहित है। यही राष्ट्र की केन्द्रीय शक्ति है। जनवाणी हिन्दी में भारत का स्वतंत्रता आन्दोलन और उसके उत्कर्ष की गाथा है, हिन्दी की पत्रकारिता उसकी सशक्त संवाहिका बनी जिसमें समन्वय, समाहार और शांति के चिर स्पंदित भाव अनुस्यूत हैं। युगीन भाव बोध, लोक रुचि का परिष्कार एवं साहित्य–संवर्द्धन में हिन्दी पत्रकारिता का अविस्मरनीय योगदान है।

साहित्यकार और पत्रकार :–
हम सभी जानते है कि हिन्दी भाषा के विकास में पत्रकारिता का बहुत बडा योगदान रहा है। पत्रकारिता तात्कालिकता के माध्यम से शाश्वत की साधना है। शाश्वत की साधना साहित्यकार और पत्रकार दोनों का अभीष्ट है। नाम दो है पर सूक्ष्म निरीक्षण किया जाय तो पत्रकार और साहित्यकार में कोई ज्यादा अन्तर नहीं है। प्रसिद्ध साहित्य सेवी श्री बालकृष्ण राव ने कहा है कि ''समसामायिक परिवेश से किसी न किसी रुप में प्रत्येक लेखक प्रेरणा ग्रहण करता है, चाहे वह साहित्यकार हो या पत्रकार। दोनों ही लेखक हैं, दानों ही सर्जनाकार हैं, दोनों के कार्य किंन्ही ऐसे गुणों की अपेक्षा करतें हैं जो दोनों के लिए अपरिहार्य हैं – दोनों देश और काल के आयामों पर अपनी–अपनी विशिष्ट परम्पराओं के अतिरिक्त उस संश्लिष्ट सांकृतिक परम्परा,उस सामाजिक चेतना–प्रवाह से भी सम्बद्ध हैं जिससे उन्हें अपनी बात औरों के प्रति निवेदन करने की प्रेरणा और शक्ति मिलती है। प्रत्येक पत्रकार अंशतः साहित्यकार भी है, प्रत्येक साहित्यकार अनिवार्यतः पत्रकार भी।''[4]

अनाविल दृष्टि चिन्तन मनन और लेखन में प्रेषणीयता की शक्ति से परिपूर्ण होकर पत्रकार और साहित्यकार दोनों 'सत्य शिवं सुन्दरम्' की उपासना करते हैं।

मानवता की सेवा पवित्र भाव से दोनों ही करते हैं। सत्य एवं न्याय की स्थापना, अनाचार, शोषण तथा दासता को दूर करने के लिए और समाज को सन्मार्ग पर लाने के लिए दोनों कटिबद्ध दिखाई पड़ते हैं।

स्थूल तथा सूक्ष्म के अवलोकन एवं विवेचन में साहित्यकार सफल होता है परंतु पत्रकार भी उससे पीछे नहीं रहता। ''पत्रकार जगत का सूक्ष्म दृष्टा होने के सिवा दूसरा है क्या? लौकिक आक्र अलौकिक जगत् मानव जीवन को जिस प्रकार प्रभावित करते रहते है और जिस प्रकार मानव उन्हें प्रभावित करता रहता है उनका साक्षात्कार और चित्रण करना पत्रकार का मुख्य कार्य होता है। जीवन और जगत् का यह पारस्पारिक घात और इोनों का वास्तविक रुप उसके अन्तस्तल में जिन अनुभूतियों, कल्पनाओं, विचारों और भावनाओं तथा आदर्शों का सर्जन करतें हैं उन्हें वह अभिव्यक्त कर देता है और अभिव्यक्ति की वह धारा ही पत्रों के स्तम्भों में प्रवाहित होती रहती है। पत्र वे दर्पण है, जिनमें पत्रकार जगत् के स्वरुप को प्रतिबिम्ति कर देता है, पत्र वे पट हैं जिन पर अपनी लेखनी के द्वारा वह संसार को चित्रित कर देता है।''[5]

मैथ्यू आर्नल्ड पत्रकारिता को शीघ्रता में लिखा जानेवाला साहित्य कहा है। हम जानते है कि पत्र के विविध स्तम्भों में लिखी गई शाश्वत साहित्य की बातें उपलब्ध होती हैं। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, प. महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालकृष्ण भट्ट प्रतापनारायण मिश्र, बाबूराव विष्णु पराडकर, शिवपूजन सहाय, प्रेमचन्द, निराला, श्रीकृष्णदेव प्रसाद गौड़ 'बेढब बनारसी' द्वारा लिखित स्तम्भ साहित्य हो चुके हैं। पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित साहित्य स्थायी मूल्य रखती हैं । यदि ऐसा नहीं होता तो शोध–छात्र पुरानी पत्रिकाओं की फाइलें उलटने में व्यस्त क्यों दिखाई पड़ते?

पत्रकारिता का हिन्दी भाषा के साहित्य में महत्व प्रतिपादित करते हुए आचार्य शिवपूजन सहाय ने लिखा है ''हिन्दी दैनिको नें जहॉ देश को उद्बुद्ध करने में अथक प्रयास किया है वहॉ जनता में साहित्यिक चेतना जगाने का श्रेय भी पाया है।''[6] युगीन भावबोध के साथ ही भाषा–आंदोलन पत्रकारिता से ही मुखरित हुआ है। भाषा का आदर्श रुप स्थिर करने, लोकरुचि का परिष्कार करने तथा साहित्य के अभावों को दूर करने में पत्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते है– ''जिस प्यारी हिन्दी को देश ने अपना विभूति समझा, जिसको जनता ने उत्कण्ठापूर्वक दौड़ाकर अपनाया, उसका दर्शन हरिश्चन्द्र चन्द्रिका में हुआ।''[7]

पत्र–पत्रिकाएॅ। साहित्यिक विधाओं की जन्मदात्री है। राष्ट्र की आकांक्षाओं, विचारों और प्रेरणाओं की वाहिका के रुप में पत्रों ने हिन्दी को राष्ट्रवाणी का रुप दिया। हिन्दी सम्बन्धी सभी आन्दोलन पत्रों द्वारा ही सशक्त हुए है।

हिन्दी पत्रकारिता का प्रथम चरण 1826 से 1866
हिन्दी की प्रथम समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' को माना जाता है। इसके संपादक युगलकिशोर शुक्ल थे। यह कलकत्ता से हर मंगलवार को प्रकाशित होता था। इसका पहला अंक 30 मई, 1826 को निकला था। 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन हिन्दुस्तानियों के हित हेतु अर्थात् उन्हें परावलंबन से मुक्ति दिलाकर स्वतंत्र दृष्टि प्रदान करने के निमित्त से हुआ था। इसे हिन्दी पत्रकारिता की आदि प्रतिज्ञा मानी जाती है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य भी स्मरणीय है कि 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन हिन्दी के नये ज्ञान मार्तण्ड के उदय की विज्ञप्ति थी। इसके पश्चात अनेक पत्र–पत्रिकाएॅ निकली जिनमें प्रमुख है–'बनारस अखबार', काशी, 1845 'मार्तण्ड' कलकत्ता, 1846 'जगदीश भास्कर' कलकत्ता, 1848 'मालवा अखबार' इन्दौर, 1848 'सुधाकर बनारस', 1850, इन दिनों में 'पयामे आजादी' नामक पत्रिकाने आजादी के लिए क्रांतिकार भूमिका निभाई। 'पयामें आजादी' के बाद अनेक पत्र पत्रिकाएॅ सामने आयी। जिनमें प्रमुख है 'प्रजाहितैषी', आगरा 1861, 'हिन्दी प्रदीप', प्रयाग 1878, 'भारत मित्र', कलकत्त 1878, 'आर्यमित्र' काशी 1878, 'आर्य दर्पण' शाहजहांपुर 1878, 'सारसुधा निधि', 1879, 'उचित वक्ता' कलकत्ता 1880, 'सज्जनकीर्ति' 'सुधाकर' उदयपुर 1879–80 आदि।

इन पत्रों में भारत मित्र' सारसुधानिधि', उचित वक्ता', आदि कुछ ऐसे पत्र उभरकर सामने आए जिन्होंने एक स्वर से जातीय प्रतिष्ठा का उद्बोधन करते हुए खड़ी बोली के विकास और उसे राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है ।

भारतेन्दु युग
भरतेंन्दु की सबसे बडी देन है हिन्दी को परिष्कृत रुप प्रदान करना। सन 1873 की 'हरिश्चन्द्र चन्द्रिका' में उन्होंने स्वतः लिखा, ''हिन्दी नयी चाल में ढली'' उनके पहले हिन्दी भाषा का कोई सर्वमान्य प्रमाणिक रुप नहीं था। हिन्दी कई आतिवादों से त्रस्त थी।

Volume : 4 | Issue : 2 | Feb 2014 | ISSN - 2249-555X

सर्वप्रथम भारतेन्दुने ही भाषा में संक्रमण की स्थिति को समाप्त किया, एक मध्यम मार्ग को अपनाय तथा उसे सर्वसम्मत स्वरुप प्रदान किया। अग्रेजी, बंगला, फारसी, अरबी से संक्रमित कुठित बोझिल हिन्दी को उबारने का श्रेयस्कर कार्य भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी भाषा के भव्य भवन की नींव रखी। इन्होंने लगभग पच्चीस पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन में प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग दिया है। 'कविवचन सुधा', काशी 1867, 'हरिश्चन्द्र मैगजीन', काशी 1874, 'हिन्दी प्रदीप' प्रयाग, 1878, 'सारसुधानिधि', 1879, 'उचित वक्ता', 'हिन्दी बंगवसी', कलकत्ता, 1890, 'नागरीप्रचारणी पत्रिका', 1898, 'हिन्दोस्तान' 1885 आदि उल्लेखनीय है ।

तिलक युग

इस युग में बाल गंगाधर तिलक ने 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध आधिकार है का नारा लगाया। यह नारा केवल स्वराज्य के लिए ही नहीं था बल्कि इसके माध्यम से स्वदेशी स्वभाषा को भी इन्होंने अपनाया। इसलिए बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक दो दशकों की पत्रकारिता में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देता हैं। इस युग में प्रकाशित होनेवाले प्रमुख पत्र थे– 'सरस्वती', 1900, इस पत्रिका ने हिन्दी भाषा विकास में बहुत योगदान दिया है। 'देव नागर', कलकत्ता 1907, 'नृसिंह' कलकत्ता 1907, 'विश्वमित्र' कलकत्ता 1907, 'केसरी' नागपुर 1903, 'अभ्युदय', 'प्रताप', 'स्वदेशी', 'इंन्दु', 1909, 'नव जीवन' 1915, 'ज्ञान शक्ति' और हिन्दी भाषा : ''इस पत्रिका के संपादकीय विचार तथा विविध लेखों से स्पष्ट होता है कि हिन्दी की वकालत करनेवाला यदि बीसवीं सदी के दूसरे दशक में पूर्वांचल में कोई पत्र था तो 'ज्ञानशक्ति' ही।''[8]

म. गांधी युग :–

पत्रकारिता तो मानो गांधीजी के रग–रग में समाई हुई थी । न्याय की प्रतिष्ठा में अखबारों की महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य भूमिका को लक्ष्य करते हुए उन्होंने कहा था– ''मेरा ख्याल है कि ऐसी कोई भी लडाई जिसका आधार आत्म–बल हो, अखबार की सहायता के बिना नहीं चलाई जा सकती। अगर मैने अखबार निकालकर दक्षिण अफ्रिका में बसी हुई भ. ारतीय जमात को उसकी स्थिति न समझाई होती और सारी दुनिया में फैले हुए भारतीयों को दक्षिण अफ्रिका में क्या कुछ हो रहा है, इससे 'इंडियन ओपिनियन' के सहारे अवगत न रखा होता तो मैं अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सकतस था। इस तरह से मुझे भरोसा हो गया है कि अहिंसक उपायों से सत्य की विजय के लिए अखबार एक बहुत ही महत्वपूर्ण और अनिवार्य साधन है। ''[9]

गांधीजी ने 4जून, सन् 1903 को चार भाषाओं में 'इंडियन ओपिनियन' साप्ताहिक शुरु किया जिसमें एक ही अंक में हिन्दी अंग्रेजी, गुजराती और तमिल भाषा में छह कालम प्रकाशित होते थे। आगे चलकर उन्होंने 'नव जीवन' 'हिन्दी नवजीवन' पत्रों के नाम बदलकर 'हरिजन' रख दिए।

इस युग के प्रमुख पत्र थे 'स्वार्थ,' 1919, 'श्रीशारदा,' 1920, 'आज', बनारस 1920, 'चॉद; 1920, 'माधुरी', 1922, 'स्वतंत्र कलकत्ता' 1920, 'कर्मवीर', जबलपुर 1920, 'सैनिक' आगरा, 1925, 'महारथी', दिल्ली 1925, 'संसार', काशी 1947 हिन्दी की पोषिका 'वीण ा' 1924 इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य हिन्दी भाषा का प्रचार तथा हिन्दी साहित्य के प्रति अनुराग पैदा करना रहा है। इन दिनों में राजनैतिक पत्रकारिता और साहित्यिक पत्रकारिता दोनों स्पष्ट रुप से अलग हो जाती है । अनेक साहित्यिक पत्रों का प्रारंभ इस युग में हुआ। भारतमित्र, कलकत्ता समाचार, मतवाला, सुधा, चांद, माधुरी, हंस, विशाल भारत आदि। इन पत्रिकाओं ने हिन्दी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हिन्दी गद्य शैली के विकास और भाषा तथा साहित्य की समुन्नति में 'जागरण'1934 का येगदान अनुठा है। इसके संपादक आचार्य शिवपूजन सहाय थे।

स्वातंत्र्योतर पत्रकारिता

1947–1964 तक की पत्रकारिता नेहरु के निर्माण और विकास दृष्टि की परिचायक है । पूरे राष्ट्र में नव निर्माण और विकास की लहर चल रही थी तो इससे पत्रकारिता कै से अछूती रह सकती है? इन दिनों पत्रकारिता ने सत्ता को अपने उपर हावी होने नहीं दिया । क्षेत्रिय पत्रिकाओं ने अपने अस्तित्व का परिचय दिया। मध्य प्रदेश में 'नई दुनिया', उत्तर प्रदेश में 'आज', व 'अमर उजाला', कलकत्ता में 'सन्मार्ग', आदि दैनिक पत्रिकाओं ने सत्ता प्रतिष्ठानों की कृपा पर कभी निर्भर नहीं रही । इन दिनों समाचार पत्रों का इतना प्रभाव था कि राज्य सरकारें भी भयभीत होती थी। 'नव भारत टाइम्स', हिन्दुस्तान' दैनिक पत्रों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

1947 के बाद महिला संबंधी पत्रिकाएँ, बाल पत्रिकाएँ, खेल पत्रिकाएँ खोज पत्रिका, अर्थ पत्रिका और ऐसी अनेक पत्रिकाओं का आविष्कार हुआ है। जिससे हिन्दी भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

1965–1975 का समय राजनैतिक दृष्टि से उथल पुथल का युग रहा है। कॉग्रेस का विभाजन हुआ, बॅकों का राष्ट्रीयीकरण हुआ, रजवाडों के विशेषाधिकार समाप्त किए गए। पत्रकारिता पर इसका बहुत गहरा आसर हुआ । इस समय तीन महत्वपूर्ण पत्रिकाओं का प्रकाशन महव्पूर्ण घटना है। 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' और 'दिनमान' ने हिन्दी पत्रकारिता को बहुत प्रभावित किया। आगे चलकर मध्यप्रदेश से 'नई दुनिया', 'दैनिक भास्कर', राजस्थान से 'राजस्थान पत्रिका', उत्तर प्रदेश से 'स्वतंत्र भारत,' 'आज', 'अमर उजाला', 'जागरण' आदि प्रमुख हैं।

इन्हीं दिनों में 1982 में हिन्दी के यशस्वी पत्रकार राजेन्द्र माथुर ने 'नई दुनिया' छोडकर 'नव भारत टाइम्स' के सम्पादक का पदभार संभाला। 1983 में प्रभात जोशी के संपादन में एक्सप्रेस समूह ने 'जनसत्ता' समाचार पत्र पुनः प्रारंभ किया राजनैतिक और साहित्यिक पत्रकारिता मे इन दोनों ने बहुत योगदान दिया है । 'जनसत्ता' ने हिन्दी की स्तरीय अभिव्यक्ति की है ।

इस सदी के अंतिम दशक तक इलेक्ट्रानिक मीडिया ने अपना वर्चस्व कायम कर लिया है और वह आज बहुत विकसित है। फिर भी वह केवल संदेश दे रहा है। आज भी प्रिंट मीडिया की शक्ति ज्यादा ही है। पत्रकारिता का क्षेत्र अब बहुत विस्तृत हो गया है। ये सभी पत्र–पत्रिकाएँ हिन्दी भाषा के विकास में अपना योगदान दिया है। आज भले ही व्यावसायिकता हावी हुई हो पर कुछ पत्र–पत्रिकाएँ निश्चित रुप से हिन्दी भाषा का विकास कर रही है। इसलिए हिन्दी भाषा आज विश्व में सब से ज्यादा लोगों द्वारा बोली जाती है। विश्व में पांचवें स्थान पर विराजमान हिन्दी भाषा भविष्य में पहले स्थान पर लायी ज्या सकती है । इसके लिए प्रचार प्रसार के आधुनिक माध्यम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, टेलीवीजन, फिल्म, इंटरनेट आदि। प्रिंट माध्यम साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं, दैनिक पत्र–पत्रिकाओं या सभी तरह की पत्रिकाओं इन सभी माध्यमों द्वारा प्रचार और प्रसार की आवश्यकता है।

REFERENCE
1हिन्दी पत्रकारिता का बृहद् इतिहास – अर्जुन तिवारी पृ. 17 | 2 वही. पृ.18 | 3 वही पृ.18 | 4 वही. पृ. 26 | 5 वही.पृ. 27 | 6 वही पृ. 28 | 7 वही पृ. 29 | 8. वही.पृ. 185 | 9 भारतीय मीडियाः अंतरंग पहचान – संपा. डॉ. स्मिता मिश्र पृ. 55 |